ज़रा सोचें...

अपने को निमित्त समझकर चलेंगे तो न्यारा और बाप का प्यारा स्वतः बन जायेंगे

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी,माउण्ट आबू

जब से हम बाबा के बने,यज्ञ से जुड़े तो अब हम व्यक्ति नहीं हैं,अब हम भी संस्था हैं यज्ञ हैं। क्योंकि लोग हमें अब व्यक्ति के रूप में नहीं देखते हैं ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी के रूप में देखते हैं। ओमशांति वाले हैं इस रूप में देखते हैं। हम अपने स्वभाव-संस्कार, गुण-कमी के अनुसार कर्म करते हैं पर लोग क्या समझते हैं? क्या ब्रह्माकुमारी में ऐसा सिखाते हैं। वो विद्यालय का ही नाम लेते हैं ना! लोग इस नज़र से देखते हैं। तो मुझे अपने आप को कैसा देखना है कि मैं अब बाबा की बच्ची हूँ। बाबा की रिप्रेज़ेंटेटिव(प्रतिनिधि) हूँ। जब व्यक्तिगत रूप से हम अपने आप को नहीं देखेंगे तो मैंपन नहीं आयेगा, देह भान नहीं आयेगा। और अब तो हम सभी सिर्फ ब्रह्माकुमार नहीं योगी-तपस्वी हैं। भक्ति में जो साधना करते हैं उनका ये ध्येय होता है-आत्म शुद्धि, आत्म शुद्धि के लिए साधना करते हैं। हम भी इसके लिए ही योग करते हैं कि हम पूर्ण शुद्ध आत्मा बनें। हम सबका भी लक्ष्य सिर्फ कर्म का ब्रह्मचर्य नहीं वो तो हमारी प्राइमरी स्टेज पर ही धारण हो जाती है। हमारी मंज़िल है सम्पूर्ण निर्विकारी बनना।

विकार का कोई अंश न रहे। जो कर्मेन्द्रिय से मुझे नहीं करना है वो मन-बुद्धि से भी नहीं करना है। पहले बाबा कहते थे ना कि माया के कितने भी तूफान मन में उठें लेकिन कर्मेन्द्रियों से कर्म नहीं करना है। अब वो तो हम बन गये हैं। कर्मेन्द्रियों से पवित्र हैं, शांत हैं, ये संयम तो हम सभी रखते ही हैं अपने आप में। अब हमारा लक्ष्य है कि मुझे पूर्ण शुद्ध आत्मा बनना है। विकार का कोई अंश भी न हो। मन्सा में भी कोई गंदगी न हो। इसी का पुरुषार्थ हम कर रहे हैं। चेहरे के हाव-भाव द्वारा हम विकर्म करते हैं, गलत कर्म करते हैं। किसी आत्मा को देखकर हम ऐसा-वैसा मुँह बनाते हैं। तो हर कर्मेन्द्रियों से विकर्म हुए हैं ना! बाबा कहते हैं जिस क्षण आप अपने आप से डिस्कनेक्ट होते हैं, बाबा से डिस्कनेक्ट होते हैं उस समय ही हम गलत उपयोग करते हैं कर्मेन्द्रियों का। भूलें तभी होती हैं जब हम अपनी सत्यता या मेरे बाबा की सत्यता को भूल जाते हैं। अब हर कर्मेन्द्रिय से आत्मभिमानी ताकत का तेज अनुभव होना चाहिए। ये है तपस्या। बाबा कहते हैं ना जितना योगी तपस्वी बनते हैं हमारी और क्षमता बढ़ती है। पहले हम सिर्फ

कर्मेन्द्रियों से पवित्र हैं, शांत हैं, ये संयम तो हम सभी रखते ही हैं अपने आप में। अब हमारा लक्ष्य है कि मुझे पूर्ण शुद्ध आत्मा बनना है। विकार का कोई अंश भी न हो। मन्सा में भी कोई गंदगी न हो। इसी का पुरुषार्थ हम कर रहे हैं।

लौकिक को निभाते थे लेकिन अब अलौकिक कर्त्तव्य भी हम निभाते हैं। डबल जवाबदारी सब ले रहे हैं। तो ना कॉन्शियस बनना है, ना अटैच होना है। इसलिए बाबा कहते हैं न्यारापन का अभ्यास बहुत ज़रूरी है। प्यारे बहुत जल्दी बन जाते पर न्यारा बनकर प्यारा बनना है।

देह भान, देह अभिमान जो हमारी विशेषता, गुण, कला, बुद्धिमता उसके अभिमान को देह अभिमान कहा जाता है। और जो हमारी स्थूल भौतिक उपलब्धियां हैं कि मैं बड़ी पोस्ट पर हूँ, धनवान हूँ, जमींदार हूँ, ये जो भी स्थूल भौतिक चीज़ों का अभिमान है वो अहंकार कहा जाता है। बाबा के बन गये अब उस प्रकार का- रूप का, धन का, पोस्ट-पॉजिशन अब वो अहंकार नहीं है। पर कई बार ये सूक्ष्म अहंकार आता है ज्ञान का अभिमान। मेरे जैसा विचार सागर मंथन किसी का नहीं। मेरे जैसा योगी कोई नहीं, मैं ही रोज़ क्लास करता हूँ, नहीं। किसी भी चीज़ का अभिमान नहीं। बुद्धि का अभिमान, कला का अभिमान मैं ही माइक अच्छा चलाना जानता हूँ। अभिमान आ गया तो बाबा कहते हैं ना वो गुण,अवगुण हो गया। अमृत में अभिमान के ज़हर की बूंद पड़ गई,वो पूरा अमृत बेकार हो गया। कोई भी गुण, कला, विशेषता, बुद्धि का अभिमान आता है तो बाबा कहते हैं गिरती कला शुरू हो जाती है। इसलिए बाबा हमें कहते हैं कि जो भी विशेषता है हमेशा ये समझो कि प्रभु की देन है। ये नहीं कि ये तो मेरे अन्दर पहले से ही था, नहीं।

हम सबका अनुभव भी है कि अंश गुण, कला को बाबा के कार्य में लगाते हैं तो बाबा हमें उसमें परफेक्ट बनाता है। थोड़ा-सा भोजन,टोली बनाने आता था और बनाते-बनाते मातायें मास्टर बन गईं। है ना हम सभी का अनुभव! तो बुद्धि में निमित्त।

मैं ये प्रैक्टिस करती थी। एकोमोडेशन देते थे तब। जब उस ऑफिस का उद्घाटन हुआ तो जगदीश भाई ने अपनी बुक में अपने शुभ वचन लिखे थे कि भल एकोमोडेशन कम भी हों पर अपने दिल में सबको एकोमोडेट करना। प्रैक्टिकल उस बात का ध्यान रखने के लिए रोज़ मैं वो पढ़ती थी और जब मैं अपना कार्य शुरू करती थी तो बुद्धि में याद कर लेती थी। बाबा मैं तो बीच में निमित्त हूँ, यज्ञ आपका है, बच्चे आपके हैं। मुझे निमित्त बनकर देना है। इस अभ्यास के कारण ये कार्य बहुत अच्छी रीति मैं कर सकी। इसलिए जब अपने को निमित्त समझकर चलेंगे तो न्यारा और बाप का प्यारा स्वतः बन जायेंगे।

नई दिल्ली। बेलामोंडा होटल में आयोजित पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में भारत के प्राचीन राजयोग का प्रचार व प्रसार करने के लिए डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके को 'इंटरनेशनल फेम अवॉर्ड्स 2023' प्रदान कर सम्मानित करते हुए सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी। साथ हैं ब्रह्माकुमारीज़ के सत्कार भवन सेवाकेन्द्र की ब्र.कु. छवि बहन, ब्र.कु. तान्या बहन व ब्र.कु. संजय भाई।

पचोर-राजगढ़(म.प्र.)। ब्यावरा अखंड परम धाम आश्रम में आयोजित महिला मोर्चा के 'सुषमा स्वराज अवॉर्ड वितरण' कार्यक्रम में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. वैशाली बहन को 'सुषमा स्वराज अवॉर्ड' द्वारा सम्मानित करते हुए महिला मोर्चा की जिला अध्यक्ष अनीता दुबे एवं सरोज शास्त्री। साथ हैं जिला भाजपा महामंत्री जगदीश पवार, नगर पालिका अध्यक्ष प्रतिनिधि पवन कुशवाह, भाजपा सदस्य दिलबर यादव, जिला प्रभारी शबनम जी, महिला मोर्चा महामंत्री नीलम सक्सेना, माधवी परमार तथा अन्य गणमान्य महिलायें।

पानसेमल-म.प्र.। श्री शिवजी आर्य,सीएमओ,मंडलेश्वर द्वारा निर्मित वेयर हाउस पानसेमल के उद्यापन समारोह में विधायक चंद्रभागा किराड़े, बारेला समाज अध्यक्ष नामदेव पटले, आमुस अध्यक्ष गजानंद ब्रह्माणे, पवारा साहेब, ब्र.कु. दिलीप भाई,ओमशान्ति मीडिया शांतिवन, ब्र.कु. अस्मिता बहन, ब्र.कु. छाया बहन व अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे। इस मौके पर ब्र.कु. दिलीप भाई ने ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् श्री शिवजी आर्य को ईश्वरीय सौगात भेंट कर माउण्ट आबू आने का निमंत्रण दिया।

जोधपुर-सूर सागर(राज.)। रामानंद धाम,आश्रम सेवा समिति द्वारा आयोजित विराट संत सम्मेलन में इंदौर मध्य प्रदेश से ब्रह्माकुमारीज़ के धार्मिक प्रभाग के जोनल कोऑर्डिनेटर राजयोगी ब्र.कु. नारायण भाई एवं नवापारा राजिम छ.ग. से ब्र.कु. पुष्पा बहन को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। इस दौरान महामंडलेश्वर इत्रानंद स्वामी जी,हरिद्वार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पुष्पा बहन व ब्र.कु. नारायण भाई। सम्मेलन में महामंडलेश्वर ज्ञानस्वरूपा नंद जी, महामंडलेश्वर श्री प्रेमानंद जी, महामंडलेश्वर स्वामी रूपेन्द्र प्रकाश जी, जगतगुरु रामानुजाचार्य स्वामी योगेश्वराचार्य जी महाराज, महामंडलेश्वर सर्वेश्वरदास जी महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी राकेश आचार्य जी, महामंडलेश्वर प्रबोधानंद गिरी जी महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी कल्याण देव जी महाराज, महामंडलेश्वर नवलगिरी जी महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी श्री अक्रिया जी महाराज सहित पूरे भारत वर्ष से अनेक संत-महात्मायें शामिल हुए।

ग्वालियर-माधौगंज(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रभु उपहार भवन सेवाकेन्द्र में महिला प्रभाग एवं कला-संस्कृति प्रभाग द्वारा आयोजित आध्यात्मिक कवि सम्मेलन एवं स्नेह मिलन कार्यक्रम में कवियत्री डॉ. कादंबरी जी, श्रीमति संगीता गुप्ता, डॉ. मनीष गिरी, डॉ. रमेश शर्मा, श्रीमति मंजुला सिंघल, डॉ. पुष्पा मिश्रा आनंद, श्रीमति आशा पांडे, डॉ. प्रतिभा त्रिवेदी, श्रीमति सत्या शुक्ला, श्रीमति संगीता शुक्ला व अन्य कवियत्री बहनों सहित ब्रह्माकुमारीज़ लश्कर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श बहन, ब्र.कु. जीतू, ब्र.कु. पवन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

भागदरी-महा.। सरपंच पिरेसिंग दादा पाडवी के साथ ज्ञानचर्चा के पश्चात् उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दिलीप भाई,ओमशान्ति मीडिया,शांतिवन।

बीना-म.प्र.। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा कच्चे रोड स्थित एक निजी फर्म में कार्यरत श्रमिकों को नशे से होने वाले शारीरिक, मानसिक और सामाजिक दुष्परिणामों के बारे में बताने के पश्चात् नशे से दूर रहने और नशा छोड़ने का संकल्प कराते हुए राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. जानकी बहन व ब्र.कु. सरस्वती बहन। इसके साथ ही मंडी बामोरा में नशा मुक्ति कार्यक्रम का आयोजन कर ब्र.कु. मधु बहन ने लोगों को नशा मुक्ति तथा ज्ञान शिखर सेवाकेन्द्र में ब्र.कु. सरस्वती बहन ने सभी ब्र.कु. भाई-बहनों को नशे से मुक्त रहने का संकल्प कराया।

जीरापुर-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए नगर अध्यक्ष अनसूया कुशवाह, पार्षद प्रिया पुष्पद, पटवारी समता गुप्ता, पार्षद सुशीला बरेठा, मेडतवाल समाज की अध्यक्ष कुसुम टाक तथा ब्र.कु. नम्रता बहन।